JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी कहानी का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

डॉक्टर पविता यादव
सहायक प्रवक्ता
हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़

सारांश

साहित्य की सोद्देश्यता उसकी सफलता और असफलता पर निर्भर करती है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि साहित्य ही वह धुरी है, जिसके माध्यम से समाज की विद्रूपताओं, बुराइयों एवं अनगढ़पन को चित्रित किया जाता है। साहित्य का उद्देश्य मात्र इस अनगढ़पन को चित्रित करना ही नहीं रहा है बल्कि उन सब कारणों की खोज करना रहा है, जिनके माध्यम से ये विद्रूपताएँ फैलीं। साथ ही उनके निराकरण के लिए भी समाज को नयी दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। हिन्दी कहानी साहित्य के माध्यम से बौद्धिक चेतना समाज को प्राप्त हुई। इस बौद्धिक चेतना को ही पूर्ववर्ती अध्यायों में राजनीतिक चेतना के रूप में व्याख्यायित विश्लेषित किया है। हिन्दी कहानी ही एक ऐसी विधा रही है, जिसके पाठकों की संख्या अन्य विधाओं की संख्या से कई गुणा अधिक रही है। कहानी संग्रहों के अतिरिक्त विविध पत्र-पत्रिकाओं में भी कहानी विधा ने अपना वर्चस्व बनाये रखा है, अतः निःसन्देह रूप से कहा जा सकता है कि कहानी साहित्य के माध्यम से ही आधुनिक साहित्य ने आम जन जीवन को प्रभावित करते हुए एक आदर्श समाज का निर्माण किया है या कहें कि सामाजिक, संस्कृति और आर्थिक समाज के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

मुख्य शब्द-सामाजिक परिवर्तन, साहित्य, समाज, संस्कृति -

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया स्वतन्त्रता मिलने से काफी पहले ही प्रारम्भ हो गयी थी, किन्तु उस परिवर्तन का स्वरूप स्वातन्त्र्योत्तर काल में ही अधिक स्पष्ट पाया। 1947 से पूर्व देश की समस्त चेतना भक्ति के आवेश में स्वतन्त्रता प्राप्त करने में व्यस्त रही। स्वतन्त्रता मिलने से पूर्व हमारा समाज असंख्य समस्याओं से घिरा था। सामाजिक पिछड़ापन, सामाजिक रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों में ग्रस्तता, जाति व्यवस्था जन्य भेदभाव, धार्मिक, अंधता,अशिक्षा, गरीबी,बेरोजगारी, आर्थिक विषमता,राजनीतिक असजकता जैसे अनेक प्रश्न थे, जो हमें स्वतंत्रता के साथ-साथ मिले थे।

देश विभाजन और स्वतन्त्रता ने सामाजिक क्षेत्र में अनेक विदूपताओं को जन्म दिया। हिन्दू मुस्लिम एकता का जो स्वप्न स्वतन्त्रता मिलने से पूर्व हमने देखा था, वह इस त्रासदी ने एक झटके से तोड़ दिया। विभाजन में कत्ल, बलात्कार, अत्याचार ही नहीं हुए बल्कि ऊपर से साबूत दिखाई पड़ने वाला आदमी भी भीतर से पूरी तरह चटख गया और उसके सारे विश्वास और मूल्य बर्बरता की आंधी में उड़ गये थे अपंग, कटे-फटे और रक्त स्नात् आदमियों के काफिले तो दोनों ओर से आये और गये ही थे, पर एक भीषण और उससे भी ज्यादा भयानक रक्तपात आदमी के भीतर हुआ है। दोनों देशों में तो कई लाख आदमी ही मरे थे, पर जिस आदमी ने इस रक्तपात को झेला और भीगा था, उसके भीतर सदियों में बने और करोड़ों जिन्दगियों द्वारा बनाए गये विश्वासों का ध्वंस हुआ था। इसलिए दोनों देशों की सीमाएँ पार करने वाले शरणार्थी से भी ज्यादा शरणार्थी वे थे, जिनके मानवीय मूल्यों की हत्या हो गयी थी।

डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, "सामाजिक संघर्ष के सिलसिले में ही व्यक्ति की संवेदनाएँ टिकती है। व्यक्ति के सामाजिक संघर्ष का रूप बदलता है तो संवेदनाओं के ढाँचे में भी परिवर्तन आता है। नयी संवेदनाएँ व्यक्ति और उसके समाज के नवीन संघर्ष की सूचक होती हैं। इसलिए आज को हिन्दी कहानियों में जब नयी संवेदनाओं की उपलब्धि की बात कही जाती है, तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि उनमें नवीन सामाजिक संघर्षो का चित्रण है। संघर्ष का अर्थ केवल युद्ध या कोई स्थूल लड़ाई नहीं है। यह एक प्रकार से व्यक्ति और समुदाय के आपसी सम्बन्धों की प्रतिक्रिया है।

समकालीन कहानीकारों ने सम्बन्धों को विसंगति, जटिलता और तनाव बोध का प्रयास किया है। साठ के बाद की कहानी सामान्य आदमी को माध्यम बना पायी है। डॉ. गोविन्द्र मिश्र के अनुसार, "सशक्त कहानी को एक ही चीज जन्म दे सकती है स्वयं की वेदना और संवेदना जहाँ दूसरे की वेदना को भी इतनी शिद्दत से महसूस किया जाये, जैसे कि वह अपनी हो। " हिन्दी कहानी की बदलती सामाजिक चेतना को ग्रहण करने में स्वातन्त्र्योत्तर कहानी सक्षम हुई है।जीवन मूल्यों के विघटन और सम्बन्धों में बिखराव के सम्बन्ध में श्री नरेन्द्र मोहन लिखते हैं, "सातवें दशक के शुरू होते ही हमने पाया कि हम एक दूसरे माहौल में आ गये हैं, जहाँ हमारे नैतिक मूल्य और मान्यताएँ अटपटी-सी लगने लगी हैं। निः सन्देह यह सम्पूर्ण मोहभंग की घड़ी थी, जिसे हम पिछले एक दशक से टालते आ रहे थे। मोह भंग के इस साक्षात्कार द्वारा समय को निर्मम सच्चाइयों के साथ हमारा सम्बन्ध जुड़ने लगा और मानव नियति की क्रूरता और भयावहता हमारे सामने प्रत्यक्ष होने लगी।

सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन के सम्बन्ध में के. एम. मालती का कथन कि, "मनुष्य के समस्त आन्तरिक विकास का केन्द्र सामाजिक परिवेश ही हो सकता है। व्यक्ति एक इकाई के रूप में अपना अलग अस्तित्व रखते हुए भी अपने सामाजिक परिवेश से कटा नहीं रह सकता। परिवेश के अन्तर्गत बाह्य वातावरण, उसकी मानसिक स्थितियों और उसके मानस पर होने वाली बाह्य स्थितियों की प्रतिक्रियाएँ भी आ जाती हैं। हिन्दी कहानी के सन्दर्भ में मध्य और निम्न वर्ग को द्वितीय महायुद्ध और भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् अनेक बाहरी एवं आन्तरिक संघर्षों से होकर गुजरना पड़ा। इसलिए नई कहानी में सामान्यः मानव के आत्म-संघर्ष को पहली बार स्थान मिला। समाज के परिवर्तन के साथ नयी संवेदना को अभिव्यक्ति करने की क्षमता कहानी में आयी। जीवन की गति

बड़ी तेज है, हर घटना के साथ जीवन के प्रत्येक सन्दर्भ बदलते रहते हैं। साठोत्तर कहानी में संवेदना का परिवर्तन अत्यन्त वेगवान रहा है। सन् साठ के बाद वैयक्तिक, सामाजिक और नैतिक परिस्थितियों में परिवर्तन आए। व्यक्ति की अनुभूतियाँ एवं संवेदनशीलता बदली साठोत्तरी हिन्दी कहानी में बेकारी, उद्देश्यहीनता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार तथा व्यक्ति के टूटे हुए मन का चित्रण हुआ है, जो निश्चित तौर पर ही सामाजिक परिवेश को उजागर करता है।

पारिवारिक विघटन के सम्बन्ध में डॉ. पुष्पपाल सिंह एक स्थान पर लिखते हैं कि, "आज मानवीय रिश्ते उसी रूप में मान्य नहीं रहे जैसे पहले थे। संयुक्त परिवार के विघटन और रोजी-रोटी की तलाश में परिवार के सदस्यों का बाहर जाकर बस जाना आदि के परिणामस्वरूप परिवार के सदस्य अपनी छोटी-छोटी इकाइयों तक ही अपने को सीमित रखने लगे। मानवीय संवेदना पर अर्थ का स्वार्थ हावी होकर बहुत सारे सम्बन्धों को बेमानी या बेमतलब का बोझ देने की रस्म सी बना रहा है। माँ-बाप, पिता-पुत्र, भाई-बहन, पति-पत्नी, भाई-भाई आदि के बीच अनाम दूरियाँ आ गयी, जिसके कारण ये सब सम्बन्ध दरकने लगे। समकालीन कहानी में इन सम्बन्धों के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है।
साठोत्तर कहानीकारों ने सम्बन्धों में प्रतिफलित हो रहे परिवर्तनों को गहराई से देखा। ‘‘सम्बन्धों के स्थायित्व और शाश्वतता का मिथक टूटा। साठोत्तर युग की कहानियों में व्यक्ति के बदलते सम्बन्ध स्पष्ट होते हैं। मूल्य संक्रमण के कारण पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव आता है। साठोत्तर कहानीकारों ने इन बदलते सम्बन्धों एवं तत्सम्बन्धी मूल्यों को देखा है। आधुनिक हिन्दी कहानी में टूटते पारिवारिक सम्बन्धों को और टूटते व्यक्ति को बारीकी से आँका गया है।

भारत की समस्याओं, परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को दृष्टि में रखकर भारतीय नेताओं और चिन्तकों ने लोकतन्त्रात्मक समाजवाद के माध्यम से देश की जनता को खुशहाल करने का सपना संजोया था। जनता को विश्वास दिलाया था कि उनकी सरकार अन्याय और शोषण से उन्हें मुक्त कर देगी, "लेकिन लोकतन्त्र के नाम पर दिखाये गये स्वर्णिम लोकतन्त्र में ही भ्रष्ट व्यवस्था के द्वारा तहस-नहस कर दिये गये। नेताओं में स्वतन्त्रता पूर्व की त्याग, सेवा समर्पण और राष्ट्र प्रेम की प्रवृत्तियाँ खत्म हो गयीं। इनके स्थान पर पद और अधिकांश का लोभ उनमें तीव्र होता गया। परिणामस्वरूप राजनीतिक क्षेत्र एक व्यवसाय केन्द्र के समान बन गया, जहाँ पद और अधिकार की प्राप्ति के लिए जायज नाजायज हर प्रकार के प्रयास होने लगे। लोकतान्त्रिक मूल्यों का अवमूल्यन हुआ।स्वातन्त्र्योत्तर कहानीकारों ने तत्कालीन परिवेश में जैसा महसूस किया, वैसा ही अपनी कहानियों में चित्रित कर दिया।

स्वातन्त्र्योत्तर कहानीकारों ने यह अनुभव किया कि समाजवाद को साकार करने के वचनबद्ध व्यवस्था वैयक्तिक स्वतन्त्रता एवं समानता का नारा तो लगाती है, लेकिन इस दिशा में उसका प्रयास नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह जाता है, ‘‘आम आदमी ने आजादी के बाद भारतीय संविधान में अपने भविष्य की जो तस्वीर देखी, वह परम्परित पितृ सत्तात्मक और कृषक समाज से भिन्न आधुनिक, बौद्धिक औद्योगिक तन्त्रात्मक और समाजवादी, जनतन्त्रवादी समाज की तस्वीर है। यह समाज एक सामुदायिक जीवन की आन्तरिक प्रेरणाओं का समाज होगा और दूसरी ओर व्यक्ति को पूरी तरह स्वतन्त्रता देने वाली वास्तविकता यह है कि संविधान द्वारा प्रचारित यह समाजवाद भारत में स्थापित नहीं हुआ। " इस सत्य को भी स्वातन्त्र्योत्तर कहानीकारों ने बड़ी बखूबी से अपनी कहानियों में चित्रित कर आम जनमानस के समक्ष उपस्थित किया और समाजवाद की ओर एक विद्रोहात्मक आवाज बुलन्द करने के लिए अवाम को प्रेरित किया।

स्वातन्त्र्योत्तर कहानी साहित्य के लेखकों के पात्र समाजवाद, वैयक्तिक स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक होने के कारण विविध तरह से हो रहे वैयक्तिक स्वतन्त्रता के अपहरण का पुरजोर विरोध करते हैं। यह अपहरण न केवल दैहिक और यौन शोषण से सम्बद्ध है, अपितु हर क्षेत्र में वैयक्तिक स्वतन्त्रता पर जमकर प्रहार हो रहा है। शिक्षा, कार्यालय, पत्रकारिता, न्यायालय आदि सभी क्षेत्र इसकी सीमा में आ चुके हैं। भ्रष्टाचार और अनैतिक आचरण के वर्चस्व के कारण शिक्षा क्षेत्र में भी स्वाभिमान की जिन्दगी गुजारना मुश्किल हो रहा है।

समकालीन साठोत्तर कहानियाँ वैयक्तिक स्वतन्त्रता के अपहरण का पुरजोर विरोध करती हैं अर्थात् वैयक्तिक स्वतन्त्रता का समर्थन करती हैं। आज ऐसी स्थिति नहीं है कि सिर्फ वैयक्तिक स्वतन्त्रता का अपहरण हो रहा है और आम आदमी उसको रक्षा के लिए कोई कदम उठा नहीं पा रहा है बल्कि आज का व्यक्ति अपनी वैयक्तिक स्वतन्त्रता के प्रति स्वयं जागरूक है। अगर कहीं अपनी स्वतन्त्रता के विरुद्ध वह समझौता करता है तो ऐसा विवशता जन्य स्थितियों में ही करता है। सामान्य स्थितियों में वह उसे सदैव अक्षुण्ण रखना चाहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. डॉ. सूर्य प्रकाश दीक्षित- हिन्दी कहानी दशा और दिशा, पृ. 16

2. डॉ. हेतु भारद्वाज स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा, पृ. 221

3. कमलेश्वर-नयी कहानी की भूमिका, पृ. 70 4. राजेन्द्र यादव कहानी: स्वरूप और संवेदना, पृ. 37

4. हेतु भारद्वाज स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा, पृ. 222

5. के एम. मालती साठोत्तरी हिन्दी कहानी, पू. 103

6. पुष्पपाल सिंह समकालीन कहानी युग बोध का सन्दर्भ, पू. 93

7. के. एम. मालती साठोत्तर हिन्दी कहानी. पू. 105

8. डॉ. इन्दु रश्मि-हिन्दी कहानी का स्वरूप विवेचन, पृ. 89